REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 8 | MAY - 2025

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृतविषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार, डॉ. जीतेन्द्र प्रताप
असि. प्रो., शिक्षा संकाय श्री दीपचंद चौधरी महाविद्यालय, ललितपुर.
असि. प्रो., शिक्षा संकाय डी. ए. वी. कॉलेज, उरई (जालौन).

सारांश-

शिक्षा एक महत्वपूर्ण मानवीय सृजन एवं परिवर्तन का सशक्त साधन है मनुष्य शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य बनता शिक्षा के विभिन्न कार्यक्षेत्रों और स्तरों में सृजनशीलता प्रबन्धन एक हतोत्साहित करने वाला कार्य है, न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में। वैज्ञानिक तथा तकनीकि उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए सृजनात्मक छात्रों की खोज एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई। सृजन ही जीवन है और जीवन की सृजन है तथा सृजन की यह क्रिया अनवरत बढती रहती हैशिक्षा में प्रभावशीलता पर शोध ने बहुत से गुणवत्ता से सम्बन्धित सवाल उठायें। शिक्षा मानव प्रवृत्तियों को केवल प्रगति के लिए उभारती है और आखिरी सांस तक उन्हे बढ़ाती है, एक प्रणाली, जो मानव यात्रा में 'गर्भ से कब्र' तक परिचालित होती है; मनुष्य निरन्तर सीखता है और प्रगति करता है कुछ बनने के लिए शिक्षा की प्रगतिशीलता को सरल बना देती है। संस्कृत शिक्षा का उददेश्य हमारी राष्ट्रीय पहचान और एकता के सुदृढीकरण हेतु समसामयिक नैतिक जीवन मूल्यों का संवधन एवं पोषण करना है। छात्र/छात्राओं में कल्पना, चिन्तन तथा सौन्दर्य बोध का विकास करना है।सृजनात्मकता वह योग्यता है जो छात्र को किसी समस्या का विद्धत्तापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है प्रचलित ढंग से हटकर किसी नए ढंग से चिंतित करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है। सृजनात्मक बालक की पहचान उसके गुणों के आधार पर की जा सकती है। सृजनात्मक बालक में धाराप्रवाह, मौलिकता, आत्मानुशासन, दृढनिश्चय, उत्साह जैसे गुण पाये जाते है। प्रत्येक प्राणी में अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशीलता है। शैक्षिक उपलब्धि का मतलब बालकों द्वारा अर्जित ज्ञान,बोध,कौशल अनुप्रयोग आदि योग्ताओं की मात्रात्मक क्षमता से है अध्यापन एवं सीखने की प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थियों में अपनी अनेक बौद्धिक क्षमताओं का विकास होता है विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास किया है, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जो सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में वांधती है संसार की सर्वाधिक प्राचीन और संपन्न भाषा के रूप में संस्कृत को जाना जाता है।

प्रस्तावना-

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास एवं संवर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है।

हमें माध्यमिक शिक्षा के विस्तारीकरण के समय भी शैक्षिणक गुणवत्ता का पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा। मानव शरीर-मस्तिष्क-आत्मा का जटिल जीव है, केवल जानकारी और योग्यता संरूप है मानव संरूप मूल्यों, रवैयों और कई अन्य प्रभावी विशेषताओं का समावेष है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से अभिप्राय व्यक्ति का उसके पूरे सामर्थ्य के अनुसार विस्तारपूर्ण विकास, छात्र और छात्राओं में विद्यमान परिपूर्णता को प्रकट करने से है। सृजनशीलता मानव इतिहास के गलियारों में निरन्तर नई चीजों का सृजन खोज का विषय रहा है मानव उद्यमों को गतिशील बनाए रखने की शक्ति रहा है। शिक्षा को विकास का आधार माना जाता है यह गरीबी हटाने और असमानता कम करने का सबसे अहम हथियार है यह मानव विकास के महत्वपूर्ण आयामों के साथ सामाजिक सुरक्षा की गारंटी मुहैया करा सकता है इससे लोकतंत्र को मजबूत करने और शासन का बेहतर संचालन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किसी भी राष्ट्र की एक शिक्षा नीति तथा इसमें समय-समय पर बदलावों की आवश्यकता होती है।शिक्षा को रचनात्मक खोज करने वाले संसाधनों पर निर्भर होना चाहिए जैसे साहित्य, अपने विभिन्न रूपों में इतिहास अनावृत रूप में जैसे उपनिवेशक तथा उपनिवेशी दोनों के चेहरे से मुखौटा हटाना अलग-अलग प्रतीत होने वाली घटना तथा चीजे वे घटना और वस्तु जो एक-दूसरे के नजदीक हैं और वे जो समय और स्थान में भिन्न हैं के बीच संबंध स्थापित करना **मेइनांज** के अनुसार हम ज्ञान-अनुभव तथा मूल्य-अनुभव विकसित करते हैं। ज्ञान-अनुभव का आशय संज्ञानात्मक अभिवृत्तियों से है क्योंकि ये ज्ञान के विषय में निर्णय लेने और दृश्य होता है। प्रायोगिक ज्ञान उस आधारशिला का काम करता है जिस पर पूरा ज्ञान टिका रहता है। समस्त सैद्धांतिक ज्ञान उस ज्ञान का उच्चारण है जिसे हमने अपने समुदाय की पंक्ति में भागीदारी करके सीखा है।शिक्षा के लिए इसका एक निहितार्थ यह है कि जिस प्रकार प्रयोगशालाओं में प्रयोग कर निगमात्मक चिंतन के द्वारा मनुष्य ज्ञान की खोज करता है उसी प्रकार साहित्यिक तथा कलात्मक रचनात्मक भी मनुष्य के ज्ञानात्मक उपक्रम का एक हिस्सा होती है। यह हमें अकसर सच्चाई से साक्षात्कार कराने में सक्षम बनाती हैं जो एक वैज्ञानिक अन्वेषण नहीं करा पाता शिक्षा को मुक्त करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए अन्यथा अब तक जो कुछ भी कहा गया है वह अर्थहीन हो जायेगा। शिक्षा की प्रक्रिया को सभी प्रकार के शोषण और अन्याय से मुक्त होना पड़ेगा जैसे गरीबी, लिंग भेद जाति तथा सांप्रदायिक झुकाव जो हमारे बच्चों को इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने से वंचित करते हैं।सृजनात्मकता साहित्यकारों, चित्रकारों, संगीतज्ञों, कलाकारों इत्यादि की उपलब्धियों के रूप में देखी जा सकती है उन्होने स्वयं की सृजनशीलता से ही अपने को संसार के नक्षत्र के रूप में स्थापित किया लेकिन जनसाधारण में भी सृजनशीलता होती है जिसे उनकी दिनचर्या की गतिविधि में देखा और अनुभव किया जा सकता है जैसे- एक अध्यापक विद्यार्थियों को उत्कृष्ट एवं सृजनात्मक रूप से इतिहास का पाठ पढ़ाता है कि उनमें सृजनशक्ति एवं पाठ के प्रति अभिरूचि उत्पन्न हो जाती है एक महिला बहुत कम आय में परिवार को सुव्यवस्थित ढंग से चलाकर घिसे-पिटे ढर्रे में एक नवीनता एवं सौन्दर्य लाती है। एक माली पौधों की पहचान चुनाव और देखभाल इतनी निपुणता से करता है कि बाग को सौन्दर्यात्मक रूप देता है इसका आशय है। कि किसी भी कार्य को करते हुए सृजनशीलता परिलक्षित हो सकती है सृजनशीलता मानव की सांस्कृतिक उपलब्धि है वास्तव में संस्कृति व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति की अभिव्यक्ति है किसी देश की सांस्कृतिक वैज्ञानिक, सामाजिक प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि देश की सृजनात्मक स्तर क्या है? सृजनात्मक प्रयास के परिणाम स्वरूप भारत अपनी जीवनशक्ति की बहुसम्पन्नता अपनी प्रचुर ऊर्जा जीवन के लिए अक्षय शक्ति और उल्लास में महान माना जाता है जीवन की सृजनात्मकता शक्ति के प्रभाव के बिना कोई महानता, उत्कृष्टता और पूर्णता के प्राप्त नहीं कर सकता शेक्सपीयर, सूरदास, बाणभट्ट आदि अनेक व्यक्तित्व इसी प्रतिरूप के आधार पर गढ़े गए। आधुनिक समय में विद्या विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास के प्रयास की ओर अग्रसर है जिनमें निसन्देह सृजनात्मकता विकास एक अभिन्न अंग हैप्रत्येक व्यक्ति जिसमें बच्चें भी शामिल है। सृजन क्षमता होती है और अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करता है शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि वह उपयुक्त तरीकों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा इस सृजन की क्षमता और अधिक विकसित करें। बालक भिन्न परिस्थितियों में अपनी समक्ष विकसित करने की क्षमता का भी विकास करते है। प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता चिन्तन के उस क्षेत्र को समग्रता प्रदान करता है जैसे- चित्रकार, संगीतज्ञ, अध्यापक, वैज्ञानिक, डाक्टर इंजीनियर सभी अपने क्षेत्र में सृजनशील होते है। वे अपना योगदान देश समाज को देने में समर्थ हुए है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनशीलता का विकास आवश्यक है इसी सन्दर्भ में भाषा सृजनात्मकता, संस्कृति और सभ्यता से सीधे रूप में जुड़ी है भाषा का उद्भव और लिपि का जन्म सृजनात्मकता का ही परिणाम है और भाषा ही बालक में कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता का विकास करती है। मानव मस्तिष्क के विकास के लिए माँ का दूध आवश्यक है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को निखारना और प्रदर्शित करके शिक्षा में कला, संगीत, नृत्य, शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल है और यह समावेशी वातावरण में कला के लिए एक केन्द्रीय मंच भी है इसकी पहल २०१५ में राष्ट्रीय स्तर पर की गई थी। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारना

है। शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण तथा उसका अध्ययन आदतों एवं उससे प्राप्त होने वाले अन्य कारक भी उत्तरदायी होते है। जैसे मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति आदि। वर्तमान समय में विश्व अधिक प्रतियोगी होता जा रहा है प्रत्येक छात्र चाहता है कि सफलता के शीर्ष स्तर पर पहुँचे परन्तु उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा बच्चों शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालय पर एक दवाव का निर्माण करती है बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित कारक का अध्ययन करना और उनके प्रभाव को समझना बहुत आवश्यक हो गया है।संस्कृत भाषा शिक्षा में मनुष्य के प्राकृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक तीनों पक्षों के विकास पर बल दिया जाता है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भारतवर्ष एवं इन्द्रधनुषीय रंग-बिरंगा राष्ट्र है इस राष्ट्र में विभिन्न भाषा भाषी, बोलियों का वैविध्य, प्रकार की वेष-भूषा सर्वत्र व्याप्त है, समाज, संस्कृति तथा अनेक परम्पराओं के वातावरण से युक्त जनसमुदाय इस राष्ट्र का वैभव है इस राष्ट्र का परिवेश विभिन्न प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दशाओं के कारण विविधता लिए हुए है राष्ट्र में बहुरूपता तथा अनेकता के बाद भी एकता का संदेश स्वमेव प्रसारित हैशिक्षा बालक के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आन्तरिक ज्ञान को बाहर लाने में योगदान देने वाली एक क्रिया है। सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक अवसाद की क्षमता का विकास हो सकेगा व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास कराना अच्छी गुणवत्तायुक्त शिक्षा, नई खोज, नए ज्ञान, नवाचार और सृजनशीलता, उद्यमता की आधारशिला है। जो व्यक्ति तथा किसी देश के विकास तथा समृद्धि को गति प्रदान करती है इसके लिए हमें अपनी पाठचर्या और शिक्षा को हमारे समाज और अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकता के अनुरूप प्रासंगिक बनाने और किशोरावस्था से ही समस्या-समाधान की खूबियों तथा सृजनात्मकता सोच कार्य करते हुए सीखने सजीव, प्रसंग की वेहतर समझ और विश्वास से स्वा-भिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। देश भर में शैक्षिक संस्थाओं की गुणवत्ता में सुधार और पहुँच को बढ़ाने सहित सुधार नियोजित करना विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थानों की स्थापना, शोध एवं कौशल विकास के लिए पर्याप्त अवसरों के साथ प्रयासरत है ताकि, यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम विश्व के सबसे बड़े कुशल कार्यबल का सृजन करें। इसलिए इस भाषा को अन्य भारतीय भाषाओं की जननी कहा जाता है। धर्म, दर्शन, विज्ञान, इतिहास, ज्योतिषशास्त्र व खगोलशास्त्र आदि प्रचुर साहित्य संस्कृति में उपलब्ध है जिनका अनुशीलन आज भी समाज के लिए उपयोगी है। परोपकार, जनकल्याण, दया, करूणा मैत्री, सत्यवादिता, शुचिता, सदाचार, नैतिकता, शिष्टाचार व मर्यादा आदि मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता गुणों की शिक्षा संस्कृत साहित्य में समाविष्ट है। विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की समझ एवं उपयोगिता का ज्ञान कराना है। भारत दुनिया के सबसे युवा राष्ट्रों में से एक है। हमारी ५४ प्रतिशत जनसंख्या की आयु २५ वर्ष से कम है। ऐसी स्थिति में वास्तविक है कि देश के युवाओं को शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से श्रम शक्ति का हिस्सा बनाने के लिए सृजनात्मक, कौशल, ज्ञान से तैयार किया जाए

शोध की सार्थकता एवं महत्व-

वर्तमान आधुनिक समाज में विद्यार्थियों का ताल-मेल स्थापित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है। राष्ट्र एवं समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन विद्यार्थियों है। शिक्षा उनके व्यवहार को परिमार्जित करती है। उनमें सृजनात्मकता एवं संवेदनशीलता, कल्पना, जिज्ञासा मौलिकता, खोजपरकता तथा नवीनता प्रस्फुटन प्रोत्साहित करती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक परीक्षण इस बात की पुष्टि करते है कि विद्यार्थियों अपने कार्य क्षेत्र में ज्ञान, कौशल, मानवीय अभिव्यक्तियों के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित कर सके। अतः वर्तमान आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों की संस्कृत विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता का पता लगाया जाय व देखा जाय कि सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि से संस्कृत पर क्या प्रभाव पड़ता है। जिससे इस दिशा में ठोस कदम उठाये जाए। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा शोधार्थी यह परीक्षण करना चाहता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता का प्रभाव कैसा है ? शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता की जॉच करने श्रेष्ठ विद्यार्थियों का पता लगाकर उनके अनुसार नई रणनीति और कमजोर विद्यार्थियों को उपचात्मक विधि से उनमें सुधार किया जा सके।

शोध के उद्देश्य- इस शोध के निम्न उद्देश्य थे।

(i) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

(ii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
(iii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यार्थियों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
(iv) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
(v) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
(vi) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाऐं– इस शोध की निम्न परिकल्पनाऐं थी।
(i) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(ii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(iii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(iv) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकताका संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(v) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियें की सृजनात्मकता कासंस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(vi) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन का क्षेत्र–

शोध उस क्षेत्र में किया जाय जिसमें शोधर्थी की रूचि हो। शोधार्थी ने अध्ययन हेतु, उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को अध्ययन क्षेत्र का चयन किया। शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को कार्यान्वित करते समय शोध क्षेत्र के समय उपस्थित मुद्दों और समस्याओं का अध्ययन किया। मुख्य रूप से क्षेत्र विन्यास और और बालक-बालिकाओं को चुनने एवं उन तक पहुँचने और सामग्री एकत्र करने की तकनीकों का उपयोग करने के दौरान सामने आने वाली समस्याओं की चर्चा को रखा गया है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–

झाँसी जनपद महारानी लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध झांसी किले का रणनीतिक महात्व है। (बलवन्त नगर) वर्तमान में झांसी के नाम से जाना जाता है। झांसी को वीरभूमि, बुन्देलखण्ड का ह्रदय एवं बुन्देली का केन्द्र के नाम से जाना जाता है।
ललितपुर जनपद उत्तर प्रदेश राज्य का प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध एक शहर है। यह ललितपुर जिला मुख्यालय है। प्रमुख पर्यटन स्थलों में देवगढ, नीलकंठेश्वर, त्रिमूर्ति, रंछोरजी, माताटीला बांध, राजघाट बांध एवं दशावतर मन्दिरविशेष रूप से प्रसिद्ध है।

जालौन जनपद जालौन उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भाग में आने वाला यह जिला झाँसी मंडल के अन्तर्गत आता है। जिला अपने गौरवशाली इतिहास, एतिहासिक किलों पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों और हस्तनिर्मित कागज के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय–

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से आश कक्षा ११वीं, १२वीं तक की शिक्षा प्रणाली में आते है। इसके लिए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यार्थीयों की शिक्षा व्यवस्था एवं परीक्षाएं संचालित की जाती है।

विद्यार्थी– इस शोध कार्य में बालक बालिकाओं को सम्मिलित किया गयाहै।जो ११वीं एवं १२वीं में अध्ययनरत् थे।

शहरी क्षेत्र– प्रस्तुत शोध कार्य में शहरी क्षेत्र से आशय ऐसे स्थान से है जहां विद्यार्थी अध्ययन करने हेतु जाते है। जहां सभी संसाधन-आवागमन बिजली, पानी, तकनीकि, संचार,मेडीकल,बैंक,शिक्षा आधुनिक प्रयोगशलाऐं जरूरत की हर वस्तु उपलब्ध होती है।

ग्रामीण क्षेत्र– इस शोध कार्य को ग्रामीण क्षेत्र के परिवेश को भी सम्मिलित किया है। जहां से अच्छे छात्र निकलते है ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन करने हेतु संसाधनों एवं जरूरत की मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव रहता है।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि का मतलब शिक्षण के उददेश्यों की प्राप्ति से है छात्रों ने शैक्षिक उददेश्यों को कहां तक प्राप्त किया है वह उनकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है शैक्षिक उपलब्धि का मतलब बालकों द्वारा अर्जित ज्ञान,बोध,कौशल अनुप्रयोग आदि योग्ताओं की मात्रात्मक क्षमता से है।

संस्कृत भाषा–संस्कृत भाषा, और इसके समृद्ध साहित्य का महत्व सहज स्पष्ट हो जाता है प्राचीनता, अविच्छित्रता, वैज्ञानिकता, व्यापकता, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्य तथा कलात्मक दृष्टि से ही नही अपितु धर्म व दर्शन के विचारात्मक अध्ययन की दृष्टि से भी संस्कृत भाषा, का अपना महत्व है संस्कृत एक ऐसी भाषा, है जो सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में वांधती है।

सृजनात्मकता–वैज्ञानिक तथा तकनीकि उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए सृजनात्मक छात्रों की खोज एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई। सृजन ही जीवन है और जीवन ही सृजन है तथा सृजन की यह क्रिया अनवरत बढती रहती है। सृजनात्मक प्रक्रिया के सोपान-धाराप्रवाहित,ललीचापन,मौलिकता ,विस्तारण।

शोध अध्ययन का सीमांकन–यह शोध कार्य उत्तर प्रदेश के झांसी मण्डल (झांसी,ललितपुर,जालौन) में उ०प्र० वोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया था।

(i) इस शोध में ६० विद्यालयों का चयन किया गया था।
(ii) जनसंख्या का चयन उच्चतर माध्यमिक स्तर कक्षा ११वीं एवं १२वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था।
(iii) इस शोध कार्य हेतु जनसंख्या के रूप में १२०० विद्यार्थियों का चयन किया गया।
(iv) झाँसी मण्डल के १५ ब्लॉक के ६० उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया था।
(v) प्रत्येक विद्यालय से २० विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
(vi) झाँसी जिले के ५ ब्लॉक जालौन जिले के ६ ब्लॉक ललितपुर जिल़े के ४ ब्लॉक का चयनकिया गया था।

शोध अनुसंधान विधि– यह शोध, शोध कीवर्णनात्मक विधि पर आधारित है। इसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग गया था।

जनसंख्या–इस शोध कार्य में झांसी मण्डल के उ०प्र० बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा ११वीं एवं १२वीं के सभी विद्यार्थी जनसंख्या के रूप लिये गये थे।

प्रतिदर्श– प्रतिदर्श का चयन स्तरीकृत प्रतिदर्श विधि द्वारा (झॉसी मण्डल के झाँसी, ललितपुर, जालौन) उच्चतर माध्यमिक स्तर के १२ ब्लॉक से ३० सरकारी शहरी एवं ग्रामीण एवं ३० निजी शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के १२०० विद्यार्थियों का चयन किया था।

झाँसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों का चयन

	झाँसी					जालौन						ललितपुर				
ब्लॉक	बबीना	गुरसराय	बड़ागाँव	चिरगाँव	बंगरा	कुठौन्द	रमपुरा	माधव गढ़	कोंच	जालौन	उरई	महरौनी	बिरधा	जखौरा	तालबेहट	योग
विद्यालय	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		४	४	४	४	६०
छात्र	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	८०	१२००

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण इस शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु सृजनात्मकता के मापन के लिये डह एस. पी. मल्होत्रा एवं सुचिता कुमारी द्वारा निर्मित भाषा सृजनात्मक परीक्षण तथा संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि मापन के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया था।

झाँसी मण्डल में संचालित माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति निम्न है।

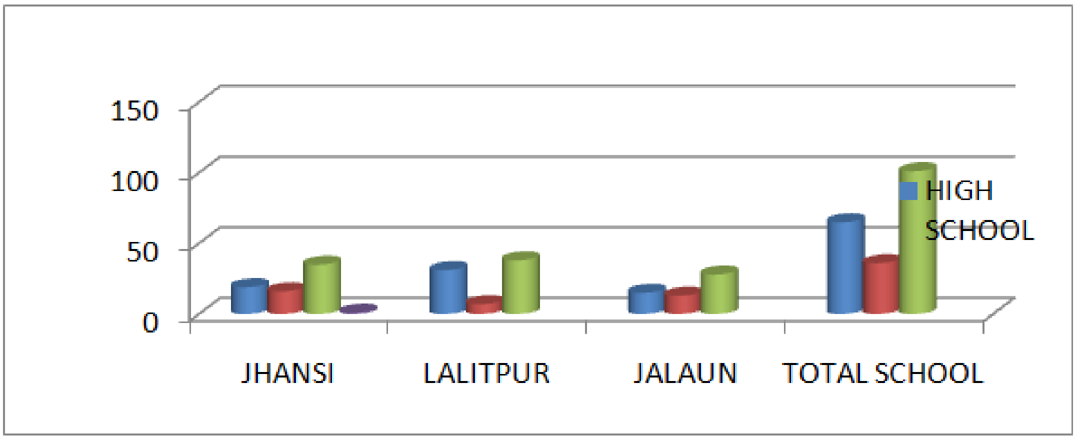

झाँसी मण्डल में साक्षरता दर की स्थिति

सारणी–१

मण्डल में जिले का नाम	पुरूष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर	औसत
झाँसी	८८.३५	७४.१०	८३.०२
जालौन	८३.४८	६२.४६	७२.६७
ललितपुर	७४.६८	५०.८४	६३.५२
मण्डल में साक्षरता दर	८६.६८	७०.५४	७८.७६

मण्डल	हाई स्कूल	इण्टर कॉलेज	योग	हाई स्कूल	इण्टर कॉलेज	योग	हाई स्कूल	इण्टर कॉलेज	योग	हाई स्कूल	इण्टर कॉलेज	योग	कुल योग
झाँसी	19	16	35	25	23	48	49	104	153	35	48	153	236
ललितपुर	31	07	38	6	05	11	20	41	61	38	11	61	110
जालौन	15	13	28	24	39	63	54	92	146	28	63	146	237
कुल योग	65	36	101	55	67	122	123	237	360	101	122	360	583

झाँसी मण्डल में साक्षरता दर का ग्राफ

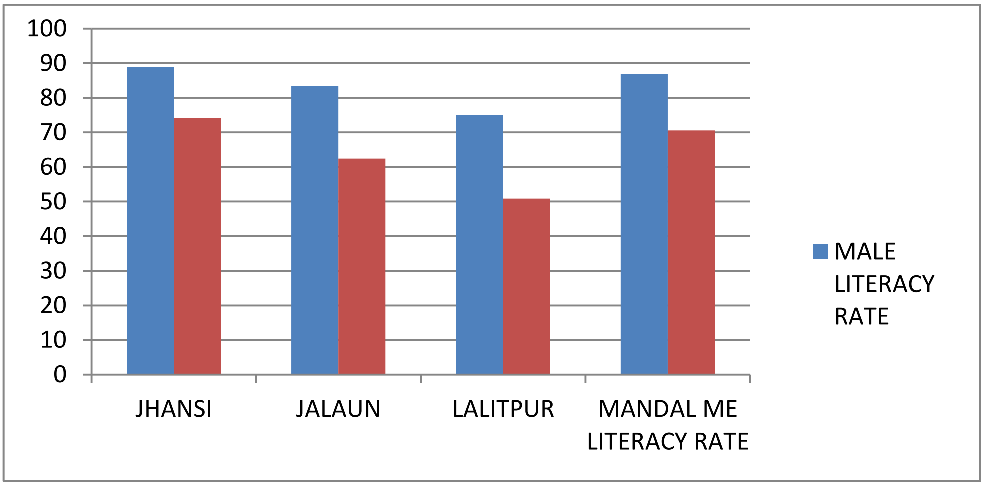

ऑंकड़े का विश्लेषण, व्याख्या और विवेचन

इस शोध अध्ययन में झांसी मंडल के झांसी ललितपुर जालौन जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया इसमें मात्र वे विद्यार्थी ही चयनित किए गए जो उत्तर प्रदेश बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय में पढ़ रहे थे कुल प्रतिदर्श संख्या १२०० थी जो शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम आंकड़ों की प्रकृति को जानना आवश्यक है कि वे सामान्यीकृत रूप से वितरित है अथवा नही के विश्लेषण को उपयुक्त विभिन्न चरो, गुणो, योग्ताओं तथा विशेषताओं को सारणी मे व्यवस्थित तथा एकत्रित करना आवश्यक होता है।

परिकल्पना-०१ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	५६८	०.०५	०.०८०	०.६२	असार्थक
सृजनात्मकता					

df= ५६८ के लिए ०.०५ का मान ०.६२

विश्लेषण इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना बनाई गई कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पडता है। दोनों चरों के मध्य सहसंबंध ज्ञात करने हेतु कार्ल पीयरसन गुणनफल अघूर्ण सहसम्बन्ध विधि का चयन किया गया। दोनों चरों के मध्य प्राप्त सहसम्बन्ध गणना का विवरण तालिका १ में किया गया है।

परिकल्पना-२ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	२६८	०.०५	०.१६८	०.११३	असार्थक
सृजनात्मकता					

df २६८ के लिए ०.०५ का मान ०.११३

विश्लेषण-: उपरोक्त सारणी संख्या- २ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक ०.१६८ प्राप्त हुआ जो कि। ९५ प्रतिशत विश्वसनीय स्तर पर सारणीयन मान ०.११३ से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है को अस्वीकृत किया जाता है उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की है उन विद्यार्थियो की सृजनात्मक भी उच्च स्तर की होती है हम कह सकते है कि निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध धनात्मक है। इसका कारण शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है।

परिकल्पना-३ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	२९८	०.०५	-०.०६१	०.११३	सार्थक
सृजनात्मकता					

df २९८ के लिए ०.०५ का मान ०.११३

विश्लेषण- प्रस्तुत सारणी संख्या ३ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान ०.०६१ प्राप्त हुआ जो कि ९५ प्रतिशत विश्वसनीय स्तर पर सारणीयन मान ०.११३ से कम है।अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजीविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है स्वीकृत की जाती है जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती हैं उन विद्यार्थियों की सृजन करने की क्षमता भी उच्च होती है इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होता है उन विद्यार्थियों की सृजन करने की क्षमता का स्तर भी निम्न है।अतः हम कह सकते है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियो की सृजनात्मक का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि में ऋाणात्मक सहसंबंध है।

परिकल्पना-४ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	५९८	०.०५	-०.३३२	०.६२	सार्थक
सृजनात्मकता					

df ५९८ के लिए ०.०५ का मान त्र ०.६२

विश्लेषण उपरोक्त सारणी संख्या- ४ के अवलोकन के से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान -०.३३२ प्राप्त हुआ जो कि ९५ प्रतिशत विश्वसनीय स्तर पर सारणीयन मान ०.६२ से कम है।अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्याथियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही है को स्वीकृत किया जाता है जिन विद्यार्थियों की शैक्षिकउपलब्धि उच्च स्तर की है उन विद्यार्थियों की सृजनात्मकता भी उच्च स्तर की नही इसके विपरीत ऐसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की है उन विद्यार्थियों की सृजनशीलता उच्च है सृजनात्मकता के लिए उच्च शैक्षिक उपलब्धि का होना अवश्यक नही है परिणामतः सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व सृजनात्कता में ऋणात्मक सहसंबंध है। शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थियों को

अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करती है। सृजनशील नये विचारों अपने आपको प्रोत्साहित करती है। इस क्षेत्र में अन्य शोधों में रूबैन (२००८) ने अपना शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशील के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना– ५ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ळें

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	२६८	०.०५	−०.३३०	०.११३	असार्थक
सृजनात्मकता					

df २६८ के लिए ०.०५ का मान त्र ०.११३

विश्लेषण उपरोक्त सारणी संख्या ५ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्नरत सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान .०⁻३३० प्राप्त हुआ है जो कि अधिक है अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यार्थियों कें ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की है ऐसे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता भी उच्च है। परिणामतः हम कह सकते है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध है।

परिकल्पना– ६ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकताका संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	परिगणित मान	सारणीय मान	टिप्पणी
शैक्षिक उपलब्धि	२६८	०.०५	०.०२२	०.११३	सार्थक
सृजनात्मकता					

df २६८ के लिए ०.०५ का मान त्र ०.११३

विश्लेषण– उपरोक्त सारणी संख्या ६ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान ०.०२२ प्राप्त हुआ ६५ प्रतिशत विश्वसनीय स्तर पर सारणीयन मान ०.११३ से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्नरत सरकारी विद्यालयों कें शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है। अस्वीकृत किया जाता है जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की है उन विद्यार्थियों की सृजनात्मकता भी उच्च है अर्थात उनकी सोचने की क्षमता पर प्रभाव पडता है परिणामतः हम कह सकते है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयो के शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्कमता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान आरेख द्वारा प्रदर्शित

Variable	Type of institute	Total Count	Mean	SE Mean	StDev	Median
Achivement Test	Govt College	165	54.485	0.837	10.756	55.000
	Privet College	118	54.58	1.03	11.19	55.00
Creativity Test	Govt College	165	377.09	4.94	63.44	356.00
	Privet College	118	402.43	6.51	70.71	410.00

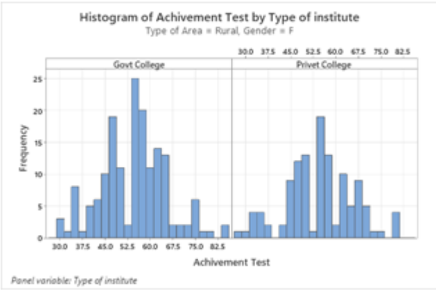

आरेख सं0– 1

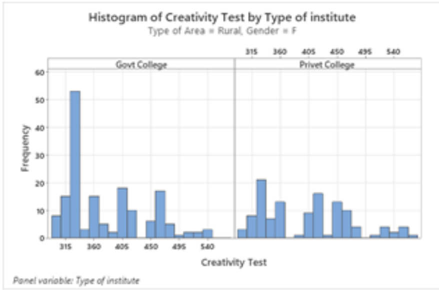

आरेख सं0– 2

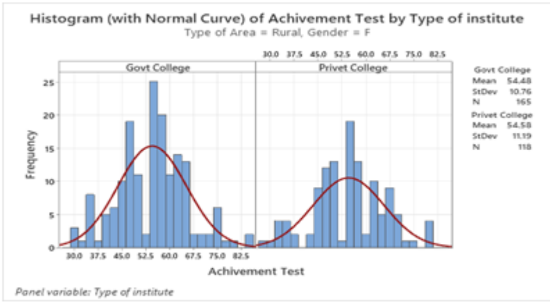

आरेख सं0– 3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान आरेख द्वारा प्रदर्शित

आरेख संख्या-६

चर	Type of institute	Total Count	Mean	SE Mean	StDev	Median
Achivement Test	Govt College	235	55.102	0.806	12.363	56.000
	Privet College	170	56.335	0.777	10.130	57.000
Creativity Test	Govt College	235	373.94	3.90	59.74	355.00
	Privet College	170	402.47	5.94	77.41	382.50

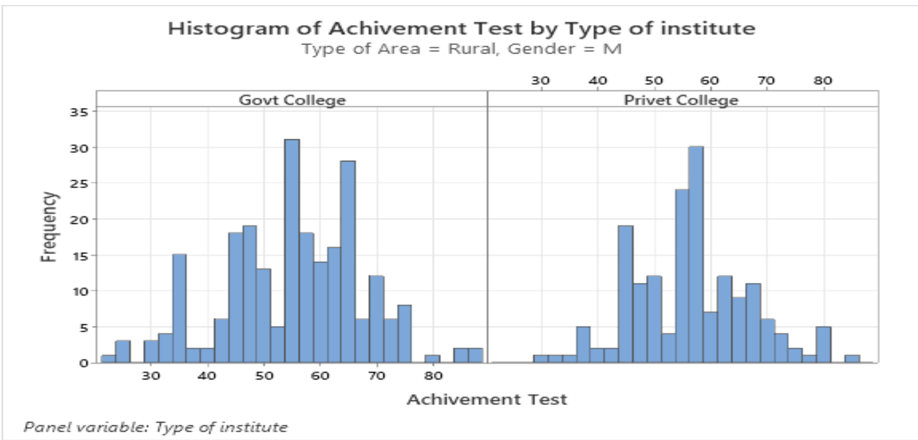

आरेख सं०- ४

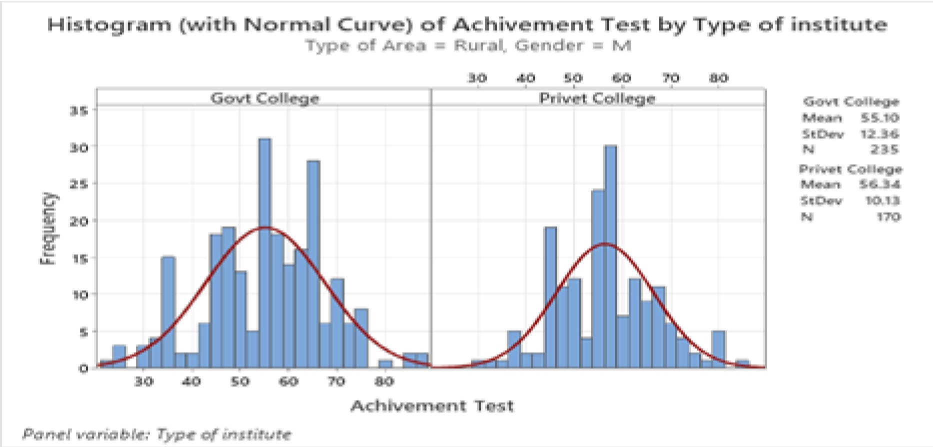

आरेख सं०- ५

निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि का सह सम्बन्ध विच्छेद चित्र

Variable-1	Variable-2	N	Correlation	95% CI for ρ	P-Value
Creativety Test	Achivement Test	600	0.052	(-0.028, 0.131)	0.204

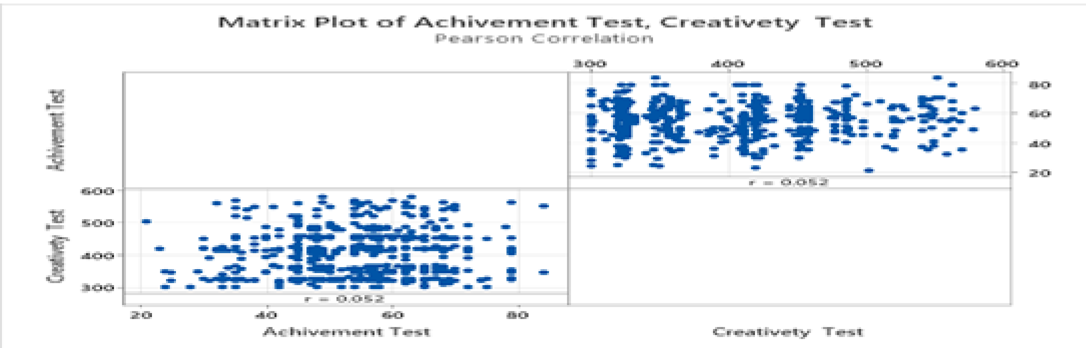

आरेख सं०- ६

उच्वतर माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की संस्कृत विषय की शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबध विच्छेद चित्र

Variable-1	Variable-2	N	Correlation	95% CI for ρ	P-Value
Creativity Test	Achivement Test	1200	-0.013	(-0.069, 0.044)	0.654

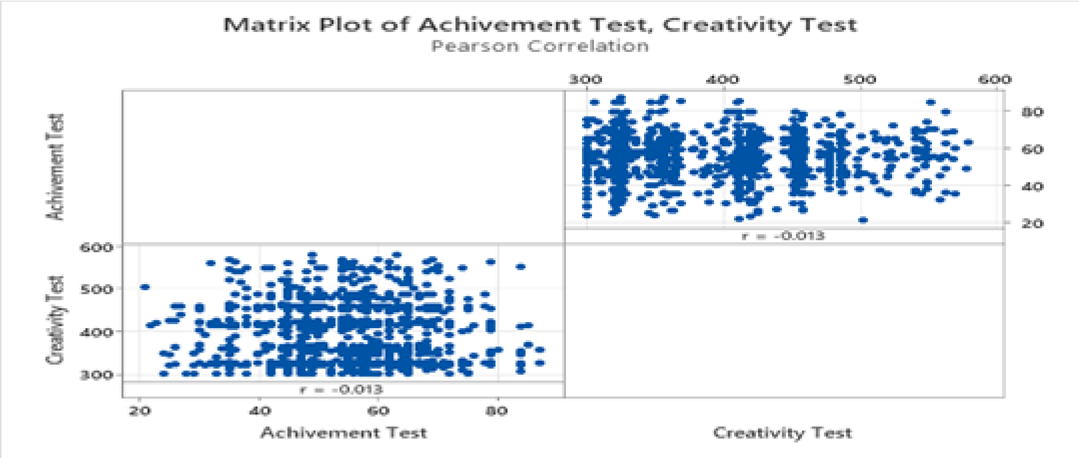

आरेख सं०- ७

शोध निष्कर्ष -

सृजनशील एवं उच्च्च शैक्षिक उपलब्धियॉं तथा भाषा के साथ तारतम्य स्थापित करता है तथा वेहतर तरीके से सीखते है जहॉं वे सुरक्षित और महसूस करते है, उनकी ऑकाक्षाऐं पूरी होती है। ऐसे विद्यार्थियों में अवधारणात्मक कुशलता ध्यान एवं तल्लीनता निर्देशनात्मक क्षमय दृश्य स्मृति, मानसिक चित्रण और स्थान विषयक सम्बन्ध स्मृति समक्ष गोर शाब्दिक , अभिव्यक्ति शाब्दिक सुविधा शब्दावली आदि समहित होते है।जिसमें माता-पिता द्वारा प्रोत्साहन व छात्रों का शिक्षा की ओर लगाव महत्वपूर्ण कारक हैं शिक्षा के लिए हमें और गुणवत्तापरक संस्थान चाहिए, जहां औसत अंक पाने वाले मध्यम प्रतिभा वाले छात्रों के लिए भी गुजाइश हो। वर्तमान परिदृश्य में एक छात्र को प्रवेश मिलता है तो सैकड़ों वंचित रह जाते हैं। इसमें हमारे छात्रों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हो सकतीं। नए कॉलेजो के साथ यह भी आवश्यक है कि वे छोटे और मझोले शहरों में हों ताकि देश भर के छात्रों का जमावड़ा कुछ चुनिंदा मेट्रो शहरों में लगने की प्रवृत्ति पर लगाम लग सके। इसमे दूरस्थ डिजिटल शिक्षा पथप्रदर्शक साबित हो सकती है। कनेक्टिविटी और सक्षमता जैसी चुनौतियों के बावजूद ऑनलाइन माध्यम में शिक्षा का कायाकल्प करने की अकूत संभावनाएं हैं। भारतीय स्कूल प्रणाली में कई शिक्षा बोर्ड हैं। प्रत्येक राज्य का अपना बोर्ड है। सीबीएसई जैसा एक अखिल भारतीय बोर्ड भी है। विभिन्न बोर्ड में न वकेल पाठ्यक्रम बल्कि परीक्षा एवं मूल्यांकन के पैमाने भी अलग हैं, जबकि उनके छात्र उच्च शिक्षा के लिए समान सीटों पर प्रतिस्पर्धा करते हैं। कुछ राज्य बोर्ड मूल्यांकन के लिए कहीं सख्त मापदंड अपनाते हैं, शैक्षिक दृष्टि से सृजनात्मकता का अत्यंत महत्व है। इसलिए सृजनात्मकत प्रवृत्ति के बालकों को प्रारम्भ में ही पहचान कर उनके शिक्षण की विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे उनकी सृजनात्मकता साहित्य तथा विज्ञान के क्षेत्र में अपना योगदान कर सकें। विद्यार्थियों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए यह आवश्यक होगा उन्हें उन्मुक्त वातावरण उचित सामग्री तथा पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जाएं। शिक्षक अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करने तथा उनका विकास करने के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। आधुनिक युग में सृजनात्मकता को एक महत्वपूर्ण योग्यता स्वीकार किया जाता है। संसार के प्रत्येक प्राणी में कुछ न कुछ सृजनात्मकता होती है। किसी में कम तथा किसी में अधिक किसी में एक क्षेत्र में किसी में अन्य क्षेत्र में सामान्य से अलग हटकर सोचना, कहना अथवा करना ही सृजनात्मकता है। सृजनात्मकता के चार मुख्य घटक-प्रवाह, विविधता, मौलिकता तथा विस्तारण है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

१. सौफिया दिमित्रियादी (२०१३) आंरभिक वर्षो की शिक्षा में विविधता विशेष आवश्यकताएं तथा समायोजन, पृ.-१७६-१७७, ४५६.
२. कौल, लोकेश. (२०१४) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा०लि० नोएडा- २०१३०१ भारत, पृ० ४५६-४७१.
३. दुबे ,इन्दु, (१६७१) शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, जयपुर हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० २६६
४. पाण्डेय, के.पी. (२००५) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन,पृ० ४३४
५. राजू एम.बी.आर., रहमतुल्ला खाजा टी. (२००७) "विद्यालयी छात्रों की समायोजन सम्बन्धी" समस्याएं भारतीय व्यवहारिक मनोविज्ञान संस्था की शोध पत्रिका अंक ३३ नं० १, ७३-७६
६. बुच, एम.बी. (१६६१) शैक्षिक अनुसंधान का चतुर्थ वर्णनात्मक एन०सी०ई०आर०टी० अरविन्दों मार्ग, नई दिल्ली अंक १, २.
७. डॉ. श्रीवास्तव, डी.एन., (२०१५) अनुसंधान की विधियाँ आगरा प्रकाशन, पृ.. ६५.
८. अस्थाना, विपिन. और श्रीवास्तव, विजय. शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-२
६. गुप्ता, रत्ना २०१६, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च , २ (६), पृ २४६-२४८.
१०. झां०,के.के. और वाई भूटिया २०१२ माध्यमिक विद्यालयों में गणित के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उपलब्धि, एडुट्रैक, नीलकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
११. निवेदिता और दीपिका २०१७ स्टडी ऑफ पेरेंटल इंकरेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल सांइस वॉलयूम ४ इश्यू ६.पृ० ६४-७२.
१२. नेगी० अंजना और रमा मोखरी २०१६ पेरेंटल इंकरेजमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग एडोलसेंस रिमार्किग वॉल्यूम २, इश्यू ८ पृ० ८०-८२.
१३. पुजु० बिलसि अब्दुल्ला २०१७ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ एडोलसेंस इन रिलेशन टू पेरेंटल इंकरेजमेंट जर्नल ऑफ इंडियन साइकॉलाजी वॉल्यूम ४, इश्यू ३ पृ० १५-२२.
१४. लारेंस, ए०एस० २०१४ रिलेशनशिप बिट्वीन स्टडी हैबिट्स एंड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ हायर एंड सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च वॉल्यूम ४, इश्यू ६ जून २०१४ पृ० १४३-१४५.
१५. नारेंस, ए०एम० और सी० बराढ़ी २०१६ पेरेंटल एन्करेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ हायर सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवासं रिसर्च एंड इन्नोवेटिव आइडियाज इन एजुकेशन वॉल्यूम २, इश्यू पृ० १२३४-१२३६.
१६. रना, ए मिगुल और पॉल्ल्यूश, सी०के० २०१५ इन्फलूएंस ऑफ स्टडी हैबिट्स ऑन एकेडमिक परफोर्मेस ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज स्टूडेंट्स इन शंघाई हायर एजुकेशन स्टडीज वॉल्यूम ५,नं० ४ पृ. ४२-५५ कनेडियन सेंटर ऑफ स्टूडेंट्स एंड एजुकेशन।
१७. मंगल २०१६ रिलेशनशिप बिट्वीन एकेडमिक अचीवमेंट एंड पेरेंटल इंकरेजमेंट इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनिरिंयग सांइस एंड कम्प्यूटिंग वॉल्यूम ६ इश्यू ४, पृ० ३६६५-३६६८.
१८. इण्टरनेशनल जर्नल आफ एजुकेशनल रिसर्च रिव्यू ६ (१) ४६,५४.